

गिरिडीह के रण में इस बार होगी तीन कुर्मा दिङ्गजों की जंग

- चंद्रप्रकाश और मथुरा के मुकाबले को त्रिकोणीय बनायेंगे टाइगर जयराम
- अपने अभेद्य गढ़ में आजसू को एक बार फिर से जीत दिला सकेगी भाजपा !

झारखंड में 'कुर्मा हार्टलैंड' के नाम से चार्चित और पूरी दुनिया में 'बेंवूकू होटल' के लिए प्रसिद्ध गिरिडीह लोकसभा सीट पर चुनावी मुकाबले की तस्वीर सफ हो गयी है। वास्तव में इस बार गिरिडीह में तीन कुर्मा दिङ्गजों के बीच होनेवाली जंग बेहद दिलचस्प होनेवाली है। भाजपा ने पिछली बार की तरफ ही अपने इस गढ़ को आजसू को सौंपा है, जिसने एक बार फिर चंद्रप्रकाश चौधरी पर भरोसा जाताया है। उधर झामुमो ने टुंडी के विधायक मथुरा महतो को अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है। इन दोनों के मुकाबले को त्रिकोणीय ही नहीं, रोमांचक बनाने के लिए

झारखंड लोकतान्त्रिक क्रातिकारी मोर्चा के अध्यक्ष जयशम महतो भी मुकाबले में उत्तर गये हैं। खतियानी नेता जयराम महतो को लोग 'टाइगर' के नाम से जानते हैं और हाल के दिनों में वह बड़ी तेजी से झारखंडी हितों के मुद्दे के साथ सियासी फलक पर उभे हैं। कुर्मा बहुत गिरिडीह सामने सबसे बड़ी चुनावी भाजपा के बोर्टों को अपने पालन में करने की होगी, वही झामुमो को अपने परंपरागत आदिवासी और

होगा, जो अधिक से अधिक कुर्मा बोर्टों को अपने पक्ष में कर पायेगा। तीन-तीन कुर्मा प्रत्याशियों के मैदान में उत्तरने की जंग से इस बोट बैंक का बंतवारा होना तय माना जा रहा है। एक ओर जहां आजसू के सामने बोर्ट बैंक का चुनाव रोपण करने की होगी, वही झामुमो को अपने परंपरागत आदिवासी और

मुस्लिम बोर्टों पर दूसरे प्रत्याशियों की सेंधमारी रोकनी होगी। उधर जयराम महतो को अपनी सभाओं में उमड़ने वाली युवाओं की भीड़ को बोट में तब्दील करने का दबाव रहेगा। इसलिए गिरिडीह के बारे में कहा जाता है कि झारखंड के 14 संसदीय क्षेत्रों में से यह संभवतः एकमात्र ऐसा क्षेत्र है, जहां यह सीट 'ओपेन फॉर ऑल' है। यह है गिरिडीह का चुनावी परिदृश्य और त्रिकोणीय मुकाबले में प्रत्याशियों की ताकत और कमजोरियां, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता गोकुल सिंह।

गिरिडीह का राजनीतिक इतिहास

गिरिडीह संसदीय क्षेत्र का राजनीतिक इतिहास बेहद रोचक रहा है। इस सीट से 1962 में स्वतंत्र पार्टी से बटेश्वर सिंह जीते थे। 1967 में सीट पर कांग्रेस के इमितयाज अहमद का कब्जा हो गया। 1971 में कांग्रेस के ही टिकट पर चपलेंदु भट्टाचार्य जीते। 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर रामदास सिंह जीते। 1984 में कांग्रेस के ही टिकट पर सरफराज अहमद जीतने में कामयाब हुए। 1989 में इस सीट पर भाजपा का खाता खुला और उसके टिकट पर रामदास सिंह जीतने में कामयाब हुए। 1991 में यह सीट झारखंड मुक्ति मोर्चा के कांग्रेस की ओर जीते। इसलिए वहां की जीतों की अपेक्षा इसी उत्तरके टिकट पर चिनी गयी थी और हासिल की जीत।



झारखंड की गिरिडीह लोकसभा सीट की गिनती भाजपा के मजबूत गढ़ में तो होती है, लेकिन यह राज्य का एकमात्र वैसे तो आम तौर पर सीधे मुकाबले की परंपरा रही है, जहां हर किसी का सियासी चौधरी पर चोट लगती है और यहां का चुनावी मुकाबला भी रोमांचक होता है। गिरिडीह में वैसे तो आम तौर पर सीधे मुकाबले की परंपरा रही है, जहां हर किसी के सीटिंग संसद चंद्रप्रकाश चौधरी एक बार फिर आजसू की परिस्थिति के रूप में ताल ठोक रहे हैं, तो झामुमो ने अपने कदाचर के लिए वह सीट जीत ली। उनकी जीत का सिलसिला 2014 में भी जारी रहा। 2019 में भाजपा ने तालमेल के तहत यह सीट जीतने के लिए वही चुनावी लिया। लेकिन इस हाथियार का इसरोमाल करने में कोई दल पिछे नहीं रहता है। वही कारण है कि इन दोनों हाथियारों के बल पर सत्ता हासिल होती है। इनमें गिरिडीह, दुमरी,

गोमिया, बेरमो, टुंडी और बाधमारा पर बिंदू बोर्ट की जीत।

गिरिडीह की राजनीतिक पृष्ठभूमि

सब जानते हैं कि जातियाती और जातिवाद के निर्णय के मार्ग में बाधक हैं। हमारा देश क्षेत्रवाद और जातिवाद के कारण खड़ी होने वाली दर्जनों समस्याओं से जु़ज़ रहा है। लेकिन इस हाथियार का इसरोमाल करने में कोई दल पिछे नहीं रहता है। वही कारण है कि इन दोनों हाथियारों के बल पर सत्ता हासिल होती है।

गिरिडीह की सामाजिक समीकरण

जहां तक बात सामाजिक समीकरण की है तो गिरिडीह

करने की होड़ के कारण देश में सैकड़ों छोटे-बड़े राजनीतिक दल उभर आये हैं। गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में भी जोड़-तोड़ की राजनीति जोरों पर चल रही है। कहीं प्रत्यक्ष, तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप से क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद और धर्म हाली है। यहां का धूम्रोक्षण भी इसी आधार पर हो रहा है। गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में कोई की समर्थन नहीं है लेकिन वोट बंटवारा का लाभ उठाकर सत्ता में काबियत होने की जुरत में हर कोई अपने स्तर से दियाग लगा रहा है।

झारखंड सीट पर 16 फौसदी मुसलमान, 14 फौसदी अनुसूचित जाति और 10 फौसदी अनुसूचित जाति की आवादी है। इसके साथ ही करीब 19 फौसदी कुर्मा महतो के प्रत्यक्ष रूप से ज्यादा गिरिडीह को जोड़-तोड़ की चाबी कुर्मियों के पास है ही और ग्रामाचारिक तौर पर इस बार तीन कुर्मा दिङ्गजों के मैदान में उत्तरने से मुकाबला रोपांचक हो गया है।

गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में कुर्मा महतो, कोयरी महतो और मुस्लिम वोट एक होने पर निर्णयक हो जाता है। यहां इसे 'म-3' समीकरण कहा जाता है। यही कारण है कि सभी ग्रामाचारियों की नजर इसी समीकरण पर ज्यादा रहती है।

भाजपा ने आजसू के साथ मिल कर 2019 में इस समीकरण को साथ लिया था, लेकिन इस बार झामुमो ने मुस्लिम महतोओं को अलग करने में पूरी ताकत लगा दी है। इसलिए सबसे ज्यादा विकट स्थिति मुस्लिम वोटरों की ही है। उन पर ज्यादा दावेदारी की जा रही है। सभी मानते हैं कि उनका वोट एकमुश्तो होता है। लेकिन महतो जीवन में उत्तरने से मुकाबला रोपांचक हो गया है।

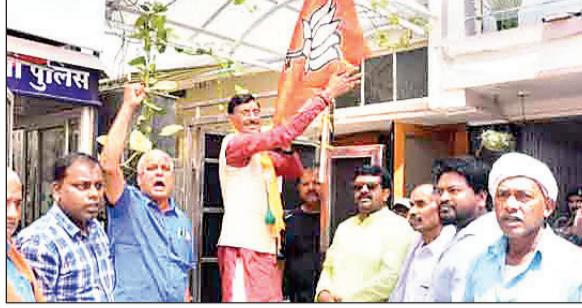
गिरिडीह संसदीय क्षेत्र में कुर्मा महतो, कोयरी महतो और मुस्लिम वोट एक होने पर ज्यादा रहती है। यहां इसे चुनावी में इनकी बोर्टों की बात करते हैं और ग्रामाचारियों की बात करते हैं। और झारखंडी भाषाओं की बात करते हैं और आजसू की अभेद्य रणनीति। इसके साथ सभी ग्रामाचारियों की लोकप्रियता और भाजपा की ताकत उनके पास है।

चंद्रप्रकाश चौधरी को एंटी-इनकमबोर्ड का नुकसान

अब बात चंद्रप्रकाश चौधरी की ताकत की। उनके प्रति एंटी

विकास की सीढ़ी चढ़ रहा लोकसभा क्षेत्र: संजय सेठ

जारी किया विकास पर
और गिनायी उपलब्धियां
बिना छुट्टी के लगातार
जनता के बीच काम किया
बुक बैंक-टॉय बैंक से
समाज में बदलाव



आजाद सिपाही संवाददाता
रांची। सांसद संजय सेठ ने कहा
कि उन्होंने बिना किसी छुट्टी के
लगातार जनता के बीच काम
किया। शनिवार को संजय सेठ ने
अपने कायाकाल में विकास पर
जारी किया, जिसमें उन्होंने पिछले

पांच वर्षों में हासिल की गयी
उपलब्धियां गिनायीं। उन्होंने कहा
कि उन्होंने बिना में अपशिष्ट उपचार
संबंधी और बड़ी बोल में जल उपचार
संबंधी बनाने पर भी चर्चा की।
उन्होंने यह भी कहा कि बुक बैंक
हुआ है। साथ ही रेलवे क्षेत्र में
सुधारों की चर्चा करते हुए कहा
कि नंदें मोदी के आशोर्वाद से
रांची में रेलवे सुविधाओं में सुधार
हुआ है। साथ ही मंदी में रांची से
तीन वर्दे भारत ट्रेनें भी चलायी हैं।

समाज में बदलाव लगा रही है।
संचय संजय सेठ ने कहा कि
कोरोना में जब दूसरे नेता और जन
प्रतिनिधि घर बैठे थे, तब वे
लगातार जनता की मदद में लगे
हुए थे। उन लोगों को आम लोगों
से कई लोना-देना नहीं है। वे
केवल चुनाव के दौरान एक महीने
के लिए लोगों को दिखाइ देते हैं।
लेकिन हमने बिना छुट्टी के काम
किया है। साथ ही रेलवे क्षेत्र में
सुधारों की चर्चा करते हुए कहा
कि नंदें मोदी के आशोर्वाद से
रांची में रेलवे सुविधाओं में सुधार
हुआ है। साथ ही मंदी में रांची से
तीन वर्दे भारत ट्रेनें भी चलायी हैं।

प्रस्तावित आउटर रिंग रोड।
उन्होंने बिना में अपशिष्ट उपचार
संबंधी और बड़ी बोल में जल उपचार
संबंधी बनाने पर भी चर्चा की।
उन्होंने यह भी कहा कि बुक बैंक
हुआ है। साथ ही मंदी में रांची से
तीन वर्दे भारत ट्रेनें भी चलायी हैं।

श्री श्याम मंदिर में भंडारा भक्तिमय माहौल में संपन्न



आजाद सिपाही संवाददाता
रांची। श्री श्याम मित्र मंडल की
ओर से भंडारा रोड के श्री श्याम
मंदिर में भंडारा माहौल में
संपन्न हुआ। श्री श्याम मित्र
मंडल के प्रधान महामंत्री विष्णुवार्णा
सुरेश सरावणी महामंत्री विष्णुवार्णा
नारसरिया और उपमंत्री
अनिल नारनोली के नेतृत्व में
भंडारे का प्रसाद अर्पित किया
गया। आओ आओ थोंग लगाओ के
बावा श्याम जी... के भजन का
गायन कर मंत्रमुद्धय किया। श्री
गोणेश महाराज के जयकारों के
साथ सुरेश सरावणी के नेतृत्व में
यजमान श्री परिवार ने प्रसाद का
मौजूद थे।

वितरण प्रारंभ किया। लगभग 2500 से ज्यादा भक्तों ने भंडारे
का महाप्रसाद भावूल में
उपलब्धियां गिनायीं। उन्होंने कहा
कि पिछले पांच वर्षों से रांची
लोकसभा क्षेत्र विकास की ओर
संयंत्र बनाने पर भी चर्चा की।
उन्होंने यह भी कहा कि बुक बैंक
हुआ है। साथ ही रेलवे क्षेत्र में
सुधारों की चर्चा करते हुए कहा
कि नंदें मोदी के आशोर्वाद से
रांची में रेलवे सुविधाओं में सुधार
हुआ है। साथ ही मंदी में रांची से
तीन वर्दे भारत ट्रेनें भी चलायी हैं।

पापी स्वयं मृत्यु को बुला लेता है : आचार्य दीनानाथ शरण



आजाद सिपाही संवाददाता
रांची। श्री जगन्नारु देवाचार्य मलुक
पीठाथीश्वर, राजद्रोह दास महाराज
के कृपाप्राप्ति शिय परम पूज्य
आचार्य दीनानाथ शरण महाराज
श्रीधाम वृद्धावन के मुख्यार्थिंद से
रविवार को विश्राम दिवस की
भागवत कथा में कहा कि पापी
स्वयं ही मृत्यु को बुला लेता है।
कंस, भस्मासुर, गवण ने अपनी
मृत्यु को स्वयं बुलाया। उन्होंने कहा
कि द्वेष भाव में श्रद्धा और विद्वेष
उपसाना बढ़ जाती है। कलंक तो

भावान को भी लगा स्वयंतक मणि
हरण का, चुली तो राम राज्य में
धोये ने किया तो कृष्णावतार में
कुंडी और युधिष्ठिर ने की प्रसंग है,
जिसमें युधिष्ठिर ने श्री दिवा कि
स्त्री कुछ भी प्रसंग छुपा कर नहीं
रह सकती है। इसलिए अरोप तो
हम सबों पर भी लग सकता है।
अंत में सुदामा चरित्र की कथा और
ज्ञानी के साथ विश्राम लिया।
कार्यक्रम के मुख्य यजमान जय
सिंह, प्रत्युष सिंह थे। वह जानकारी
पंडित रामदेव पांडेय ने दी।

रांची। रांची के मोरहावादी स्थित
श्याम प्रसाद मुख्यमंत्री सभागार में
शनिवार को ईद, सरहुल और
रामनवमी को लेकर केंद्रीय शांति
समिति की बैठक आयोजित की
गयी। रांची उपायुक्त राहुल कुमार
सिन्हा की अध्यक्षता में आयोजित
बैठक में व्यापक अधीक्षक,
रांची चंदन सिन्हा, पुलिस
अधीक्षक नगर राजकुमार महेन्द्रा,
पुलिस अधीक्षक ग्रामीण, पुलिस
अधीक्षक वायायात, अपर जिला
दंडाधिकारी (विधि-व्यवस्था),
अनुपमंडल पदाधिकारी, सदर अन्य
संबंधित पुलिस पदाधिकारी, अपर जिला
अंचलाधिकारी, केंद्रीय शांति
समिति एवं सरना समिति के सदस्य
उपस्थित थे। बैठक में केंद्रीय एवं

कहा कि रांची जिला का पूरे विश्व
में विविध तरह के सफल
आचार्यों को लेकर नाम हो रहा है।
इस बार भी सभी के सहयोग से
सभी पर्व त्योहारों को सौहार्दपूर्ण
वातावरण में संपन्न कराया जायेगा।
त्योहारों को बेहतर तरीके
से संपन्न करने के लिए जितनी
भी आवश्यकता है उसे पूरा करने
का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने
कहा कि सभी प्रशासनिक अमलों
के साथ मिल कर हमारा प्रयास
होगा कि हर जगह आवश्यक
व्यवस्था सुनिश्चित हो सके।

कहा कि जिला प्रशासन का काम किया
जायेगा। राहुल कुमार सिन्हा ने कहा कि
जिला प्रशासन द्वारा वर्ष 2024 में
संदर्भ सेट देखा जाने वाला चैनल
भाजपा की तरह बेहतर व्यवस्था
देने का होगा। उन्होंने कहा कि
जिला प्रशासन का काम किया जायेगा। राहुल कुमार सिन्हा ने कहा कि

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर आज विकित्सा शिविर लगेगा

रांची (आजाद सिपाही)।
अखिल भारतीय महिला
सम्मेलन के द्वारा विश्व
स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 7
अप्रैल रविवार को अपराह्न तीव्र
बजे से रेजियाली के मोरहावाडी
में टीआरआर के नजदीक
फूटोल ग्राउंड में विकित्सा
शिविर सह ज्ञानरूपका का
आयोजित किया गया है। इस
संदर्भ में जानकारी देते हुए
अखिल भारतीय महिला
सम्मेलन की सचिव अनुपमा
प्रसाद ने बताया कि इस शिविर
में अनेक विकास पर 7 अप्रैल
चलने वाली विश्व का काम किया जाएगा। इस अवसर पर
श्री मरांडी ने कहा कि देशसेवा एवं
जनसेवा में सदैव समर्पित, एकात्म
मानववाद और अंत्योदय के मंत्र
पर अग्रसर रहने वाले विश्व के
सभसे बड़े राजनीतिक दल हैं जो
भारतीय जनता पार्टी।

नेता प्रतिष्ठा अमर कुमार
बाटुरी ने चंद्रागंगीरी शिविर

भाजपा का स्थापना दिवस मनाया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रदेश भर में प्रत्येक
कायाकर्ता अपने अपने घर एवं
जिला-मंडल पार्टी के नजदीक
भाजपा की झंडा लगाया। गढ़वा के
विश्रामपुर मंडल में भाजपा प्रदेश
अधीक्षक बालुवाला मरांडी ने पार्टी
का झंडा फहराया। इस अवसर पर
श्री मरांडी ने कहा कि देशसेवा एवं
जनसेवा में सदैव समर्पित, एकात्म
मानववाद और अंत्योदय के मंत्र
पर अग्रसर रहने वाले विश्व के
सभसे बड़े राजनीतिक दल हैं जो उन सभी
भारतीय जनता पार्टी।

नेता प्रतिष्ठा अमर कुमार
बाटुरी ने चंद्रागंगीरी शिविर

के बीच दिखाया है।

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मचारी
ने भाजपा प्रदेश कार्यालय में
भाजपा द्वारा हण कर स्थापना
दिवस मनाया। कहा कि सेवा ही
समर्पित अंत्योदय व के एकात्म
मानववाद निःविरोध विश्व के
सभसे बड़ी पार्टी है।

इस अवसर पर अशोक
बाटुरी, केके गुरु, नीरज सिंह,
सीमा पासवान, निशि जायसवाल,
बलबीर सलूजा, संजय चौधरी,
पीयूष सरकार, अमित चरण,
बबता वर्मा, सोनी हमरोम सहित
कई उपस्थित थे।

इस अवसर पर अशोक
बाटुरी, केके गुरु, नीरज सिंह,
सीमा पासवान, निशि जायसवाल,
बलबीर सलूजा, संजय चौधरी,
पीयूष सरकार, अमित चरण,
बबता वर्मा, सोनी हमरोम सहित
कई उपस्थित थे।

इस अवसर पर अशोक
बाटुरी, केके गुरु, नीरज सिंह,
सीमा पासवान, निशि जायसवाल,
बलबीर सलूजा, संजय चौधरी,
पीयूष सरकार, अमित चरण,
बबता वर्मा, सोनी हमरोम सहित
कई उपस्थित थे।

इस अवसर पर अशोक
बाटुरी, केके गुरु, नीरज सिंह,

संपादकीय

मुख्य विपक्षी दल का घोषणा पत्र

मुख्य विपक्षी दल का ग्रेस ने शुक्रवार को घोषणा पत्र जारी कर उन प्रमुख बिंदुओं को स्पष्ट किया, जहां उसके मुताबिक सत्ता पक्ष का प्रश्न ठीक नहीं रहा है और अगर मतदाताओं ने भौमैक दिया तो सत्ता में आने पर वह उन पर अपना ध्यान केंद्रित करेगी। इस लिहाज से कांग्रेस के इस न्याय पत्र की कुछ बातें खास तौर पर ध्यान देने लायक हैं। जातिगत जनगणना इस घोषणा पत्र का अहम हिस्सा है, जिसकी राष्ट्रीय स्तर पर चुनावी परीक्षा होनी है। माना जा सकता है कि अगर इस बार की बोटिंग में इस मुद्रे की खास भूमिका नहीं दिखती है, तो वह संभव है कि अनेक बाले दौर में आक्षण्य जैसे मुद्रे की राजीवांशी हाथियां कम कर देंगीं। अपनी धर्मियत के लिए इस न्याय पत्र में कहा गया है कि 10 वार्षीय का एडीएस शासन 10 साल के युग्मे राज के मुकाबले विकास दर की कसीटी पर कमज़ोर साबित हुआ है। यह केंद्र की बीजेपी सरकार के डेवलपमेंट के नैरेटिव को चुनौती है। इन परस्पर विरोधी दावों की प्रामाणिकता के सवाल में उलझे बैरेर यह देखना ज्यादा दिलचस्प होगा कि मतदाता किसके दावे पर अपनी मुद्रा लगात हैं। हालांकि, कुछ समय पहले हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस और बीजेपी दोनों ही और से लोकाल्पभावन वादे लोगों का झुकाव केंद्र की सत्तारूढ़ पार्टी की ओर दिखा। कल्याणकारी घोषणाओं पर जोर देने के बावजूद कांग्रेस का यह घोषणा पत्र ओल्ड पेशन स्क्रीम (ओपीएस) पर चुप्पी साधे हुए है। पिछले कुछ विधानसभा चुनावों में कांग्रेस का इस पर जोर था। हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में मिली कामयाती के पीछे इस वादे की भी भूमिका बतायी गयी थी, लेकिन आर्थिक विशेषज्ञों की राय थी कि यह वित्तीय समझदारी के खिलाफ है। ऐसे में कांग्रेस ने अगर सोच-समझ ढंग से इस मुद्रे पर कदम पाले तो इसकी सराहना होनी चाहिए। सत्तारूढ़ बीजेपी की नीतियों से खुद को अलग दिखाने के प्रयास में पार्टी ने उन विवादित मुद्रों से भी परहेज नहीं किया है, जो खास तौर पर हाल के वर्षों में राजीवांशीक और उगाचारी लिहाज से हानिकारक करार दिये जाने लगे हैं। उदाहरण के लिए पार्टी ने खानपान, वेशभूषा, भावा और पर्सनल लॉ के मामले में अल्पसंख्यकों समेत सभी नागरिकों के लिए चयन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने की बात खास तौर पर कही है। कुल मिल कर, मुख्य विपक्षी दल के इस मामले में साहस्रक कहा जायेगा कि इसने नीतियों की वैकल्पिक विश्वास्था करने की कोशिश की है। अब इस पर वह बोरों को कैसे और किस हद तक आशवस्त कर पाती है, यह देखने वाली बात होगी।

अभिमत आजाद सिपाही

परम पूज्यपाद श्री उदिया बाबा जी महाराज को बाल्यकाल से ही अनंत सिद्धियां प्राप्त थीं। मां अन्नपूर्णा उनको सिद्ध थीं। कैसा भी बीहड़ जंगल हो, सभी लोगों के भोजन की व्यवस्था वह अपनी सिद्धि से कर दिया करते थे। जहां कहीं भी वे रहते बाबर भंडारों का तांता लगा रहता था। उन्होंने अनेक भक्तों को ग्राण दान दिया। ऐसे मुक्त किया। आर्थिक संकटों से उवरा एवं अन्य आपत्तियों से रक्षा की। भक्त उनका भगवान शिव के भाव से छद्मगिरे करते तो कभी कृष्ण रूप में उनकी झाकियां सजाते।

सिद्ध संतों में एक थे उदिया बाबाजी महाराज

पूर्णोत्तम दीक्षित

परम पूज्यपाद श्री उदिया बाबाजी महाराज भारत के सिद्ध संतों में एक थे। उनका अद्भुत जीवन संपूर्ण समाज के लिए एक आदर्श रूप था। उनको कृपा से असंख्य लोगों में भक्ति और ज्ञान की जापति हुई। चैत्र कृष्ण चतुर्दशी रविवार, 7 अप्रैल 2024 को उनका 75वां निर्वाण दिवस है। आज भी उनकी परपरा में परमपूज्य स्वामी श्री अखण्डनांद सरस्वती एवं उनके कृपा पात्र जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मानेन स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती के आशीर्वाद से वर्तमान में श्री उदिया बाबा आश्री वृद्धावत ध्याम में सुचारू रूप से चल रहा है। उनके समकालीन संतों में पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज, श्री हरि बाबा जी, श्रीमां पां अनंदपां, स्वामी श्री गंगेवरानंद जी महाराज, स्वामी श्री शरणानंद जी व अन्याच शमान संत उनके साथ वेदान्त सत्संग करते रहे। श्री उदिया बाबाजी के अनन्य भक्तों में जगदगुरु शंकराचार्य श्री शांतानंद सरस्वती, स्वामी श्री प्रबोधाचार्यनंद सरस्वती, महर्षि कार्तिकेय जी, श्री पलटू बाबा जी, गोवर्धन के सिद्ध संत प्रदत्त गव प्रसाद जी, स्वामी सिंहद्वाराप्राप्त जी व अन्य संतों के नाम उल्लेखनीय हैं।

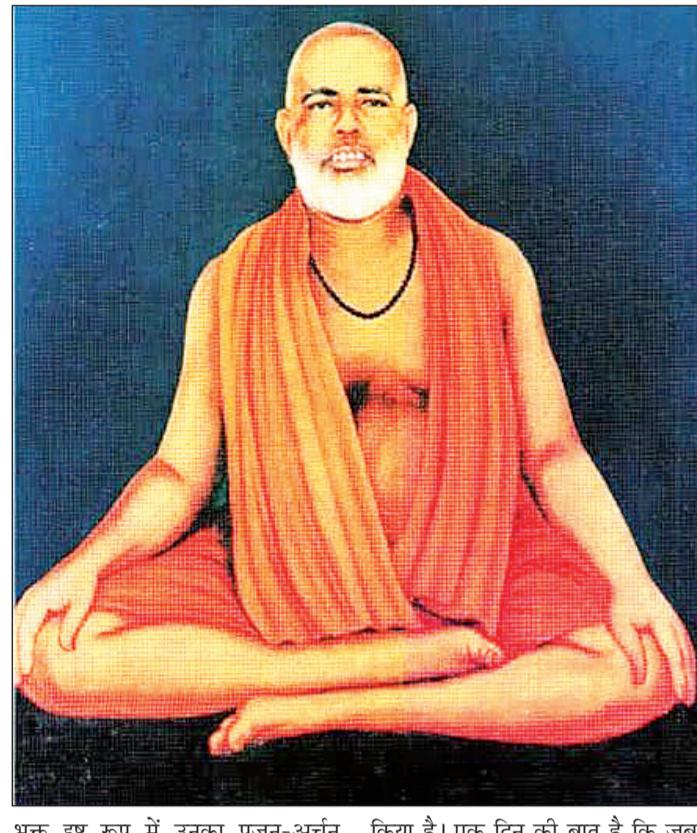
परम पूज्यपाद श्री उदिया बाबा जी महाराज को बाल्यकाल से ही अनंत सिद्धियां प्राप्त थीं। मां अन्नपूर्णा उनको सिद्ध हीं। उनके अनंत सिद्धियां प्राप्त थीं। मां अन्नपूर्णा उनको सिद्ध हीं। उनके समकालीन संतों में श्री उदिया बाबाजी महाराज ने कामाख्या में मां जगदगुरु की आराधना की तो मां साकाशत प्रकट हुई और उनको एकाकर कर लिया। कालांतर में वह नित्य निरन्तर समाधि में लीन रहते थे परमपूज्य स्वामी श्री अखण्डनांद जी महाराज के पास रहना ठीक लीन नहीं है। उन्होंने एक बजे दोनों वेदात के सत्संग में श्री उदिया बाबाजी महाराज की कथनानुसार उदिया बाबाजी का स्वरूप (अखण्डनांदजी) ने सोचा कि क्या महाराजाजी ने मन की बात जान ली है? यदि यह सही है तो इस समय ही वो मुझे खाने के लिए कोई चीज दें। तब मैं समझूँगा कि वह मेरे मन की बात जान रहा है। उन्होंने एक संह प्रकाशित हुआ था। बाद में उनके आश्रम से श्री उदिया बाबाजी के उपदेश प्रकाशित हुए।

उन्होंने अनेक भक्तों को प्राप्त दिवा

दिवा। रोग मुक्त किया। आर्थिक संकटों से उवारा एवं अन्य आपत्तियों से रक्षा की। भक्त उनका भगवान शिव के भाव से रुद्राभिषेक करते तो कभी कृष्ण रूप में उनके अन्य भक्तों को इस मामले पर उल्लेखनीय है।

उनके अनेक भक्तों को प्राप्त दिवा

दिवा। रोग मुक्त किया। आर्थिक संकटों से उवारा एवं अन्य आपत्तियों से रक्षा की। भक्त उनका भगवान शिव के भाव से रुद्राभिषेक करते तो कभी कृष्ण रूप में उनके अन्य भक्तों को इस मामले पर उल्लेखनीय है।



कृष्ण इस रूप में उनका पूजन-अर्चन करते थे।

वह भक्तों के लिए सबकुछ

समय आश्रम की छत पर लेटे हुए थे।

जैसे उन्होंने कुछ नहीं किया।

उदिया बाबाजी के आश्रम की छत पर लेटे हुए थे।

रात्रि के लिए उनका अर्चना

करते थे। उनके अनेक भक्तों

ने उनके अनेक भक्तों

के लिए उनके अनेक भक्तों

